

C. XXXVIII. v. 127. χαράσσω. Vox Hesiodæa cum recentioribus tum Nonno in deliciis est. Apud Hesiodum significat exacuere, velut *Erg.* κ. Ἡμ. 385. χαράσσο-
 μένω σιδῆρου. Atque Nonnus I. 220. (Luna pugnans cum Typhoeo) ἐχάραξε φαειφόρα
 κύκλα ταυρείης κεραίας. XV. 29. κεραίων (tauri) κεχαραγμένων ἄκρον ἐρύσσας. Hesych.
 χαράσαι explicat κόψαι, κοιλᾶναι, τυπᾶσαι. Eustath. ad Il. VI. 169. καθὰ τὸ γράφειν,
 οὕτω καὶ τὸ χαράσσειν ἐξ ὀνοματοποιίας παρερῆχθαι δοκεῖ ἐπὶ σημασίας ὁμοίας, διὰ
 καὶ τὸ κείνω τὸδε μὴ χαράσσω (Eurip. Med. 158, sed vid. Schol.) ἀντὶ τοῦ μὴ ἐπι-
 γραφε ἐρμητρεύουσιν οἱ παλαιοί. Quod si apud Euripidem χαράσσεσθαι idem fere
 sonat, quod ὀργίζεσθαι, dictum est, ut latine acui vel exacui, quod idem ad hanc
 animi affectionem transferri constat. Hoc verbi χαράσσειν usu Nonnus, quod ego
 sciam, prorsus abstinuit. Sed quo facilius, quam apud eum hoc vocabulum vim ha-
 beat variam ac multiplicem, intelligatur, in afferendis locis ita versabor, ut copiam
 eorum ad hanc ipsam significationis varietatem digeram ac componam.

Primum igitur est inscribere, incidere, exarare, velut Il. 627. ὑστάτιον
 δὲ σὸν κενεὸν παρά τύμβον τοῦτο χαράξω. XLVI. 317. ὑμετέρῳ δ' ἐπὶ σήματι τοῦτο
 χαράξω. XI. 471. ἀμφὶ δὲ τύμβῳ γράμμασι πενθάλοισιν ἔπος κεχαραγμένον ἔστω.
 Itaque literis consignare, scribere: M. Ev. Joh. τ. 139. ὅς τάδε πάντα χάραξε.
 Φ. 141. ὅσα καθ' ἐν στοιχηθὸν ἀνήρ βροτὸς αἰ κε χαράξῃ. XXV. 10. ὑσμίνην χαράξω.
 XV. 359. χειρὶ χάραξον ἔπος πενθάδι μίλτῳ. XII. 67. γράμματα μίλτῳ κεχα-
 ραγμένα. Adde XII. 107. XLI. 352. XXI. 303. M. Ev. Joh. H. 160. B. 89. M. 73.
 Θ. 22. (conf. Lycophr. Alex. 1172. Luc. Amor. XLVII. init.) K. 123. XXI. 273. πίνακος
 κενεῶνα χαράξας. πίνακος pro σάκεος Cunaeus (animadv. p. 134.) dedit de coniectura.
 poeta enim, inquit, regem dicit literas dedisse in tabulis exaratas. In animo habuit
 Nonnus Homeri verba (Il. VI. 168 sqq.). VI. 19. γραμμῆσι χαράσσω κενεῶνα ἐνέ-
 πασσε κόνιν περὶ νῦτα τραπέζης: est hic pulvis eruditus, quo abacus conspersus erat.
 Pers. Sat. I. 134: Nec qui abaco numeros et secto in pulvere metas scit risisse cet.
 Vid. Heinr. ad Juven. Sat. III. 203. Cic. de nat. Deor. II. 18. Inde IV. 268. χειρὸς
 ὀπισθοπόρου χαράγματα λοξὰ χαράσσω ἐγράψεν ἀγκύλα κύκλα. M. Ev. Joh. T. 108.
 de elogio in summa cruce perscripto: ἦν δὲ μῆς παλάμης νοεῶν κεχαραγμένον ὀκνῶ
 Αὔσονι γλώσση cet. IV. 274. δαίδαλα (hieroglyphica fuisse Köhler opinatur com-
 ment. de Dionys. p. 9.) βαδινομένων κεχαραγμένα τοίχῳ, inscripta vel insculpta.
 conf. XLI. 371. — XII. 247. αἰλίνα σοῖς πετάλοισι χαράσσεται. adde eod. libr. 225.
 XLVIII. 618. (conf. Theocr. Id. X. 28. Ovid. Met. X. 214: non satis hoc Phoebo est.
 Ipse suos gemitus foliis inscribit: et ai ai Flos habet inscriptum funestaque litera ducta
 est. ad quem locum vid. annot. Gierigii.) Deinde χαράσσειν est describere, de-
 pingere seu imitando exprimere, V. 103. καὶ παλάμας ἐλέλιξε Πολυμνία
 μιμητὴν δ' ἐχάραξεν ἀναυδέος εἰκόνα φωνῆς. XIX. 198. σιγῆν ποικιλομῦθον χειρὶ χα-

ράσσω. conf. Cun. animadv. p. 130. V. 527. ὄφρα χαράξῃ ζωότυπος ἐμὸν εἶδος ἀπ' αὐχένος εἰς πόδας ἄκρους. (conf. Pausan. Boeotic. cp. XXXVIII. 4.) XII. 105. παρά γείτονι τοίχῳ ποιητῷ κεχάρακτο τύπῳ Γανυμήδεος εἰκάν. XXV. 552. καὶ Κυβέλλη κεχάρακτο νεητόκος (in scuto sc. Bacchi) atque hoc ipso loco, ad quem haec congerimus, προχοαῖς κεχάρακτο τύπος χροός. de vi plusquamperfecti vid. Lehrs. quaestt. epic. p. 292.

Ad hanc verbi χαράσσειν significationem proxime accedunt loci, quibus valet signare vel distinguere, velut III. 56. ἀλλ' ὅτε ἄκρα χαρασσομένην ὑπὸ ὄργαδα Ἰδης φάνη Ἥως. XXVII. 50. Αἰδέρα Γαῖα λόχευσε χορῶν κεχαραγμένον ἄστρον i. e. signatum sive distinctum sideribus. conf. XXV. 389. XXXVIII. 311. XL. 385: σείο (Solem dicit) δὲ λαμπομένοιο φράντερον οὐκέτι λάμπων ποικίλος εὐφάεσσι χαράσσεται ἄστράσι λειμών. Non Noctis vestem stellatam, sed ipsum coelum intelligi malim. (vid. Iacobs ad Achill. Tat. lib. I. ep. 16. p. 478.) XLI. 298. in opere textorio: ἀμφὶ δὲ γαίῃ οὐρανὸν ἐσφαίρωσε τύπῳ κεχαραγμένον ἄστρον. XIV. 239. στικτὸν δῶρηκα, τύπον κεχαραγμένον ἄστρον. conf. IX. 186. Εὐῖος δαυδαλέην ἐλάροιο φέρων ἄμοισι καλύπτειν, αἰδερίων μιμηλὸν ἔχων τύπον αἰόλου ἄστρον. pellem hinnuli maculis distinctam dicit. Vid. Schoen. de pers. in Eur. Bacch. h. scen. comment. p. 88. XXXI. 226. Ἄργος, custos ille Ius, ἀργυρίους κεχαραγμένους ὀπωπαῖς dicitur. Ovid. Met. I. 625: centum luminibus cinctum caput Argus habebat: aliis erat πανόπτῃς: de quo epitheto vid. Schol. ad Hom. II. II. 103. M. Ev. Ioh. I. 32. μέσην ἐχάραξε ὀπωπὴν et 76. ὀφθαλμοὺς ἐχάραξεν, πηλῶ scil.

Inde de prima lanugine X. 180. ἄβρός Ἰούλος ἐχαράσσετο κύκλα παρειῆς. V. 404. Ἰούλων ἀνθεῖ κεχαραγμένον ἀνδρεσῶνα. conf. Christod. Ecphr. 212. 278. Ovid. Met. XIII. 756. signarat dubia teneras lanugine malas. vid. Iacobs ad Rufin. Epigr. II. v. 6. — Tum vero Nonnus ἄστῳ χαράσσειν dixit, i. e. ambitum urbis designare. Virg. Aen. I. 425: post optare locum tecto et concludere sulco. V. 755. Interea Aeneas urbem designat aratro. Confer. Varro de ling. l. l. IV. p. 40 ed. Bipont. Fest. s. v. urvat. XLI. 271. μενέανεν ἄστῳ χαράσαι (vid. Gron. Diatrib. in Stat. Silv. tom. II. p. 149. ed. Lips.) Adde III. 191. V. 64. XVIII. 294. ad quem locum Cunaeus (animadv. p. 57) infeliciter, inquit, conatus est in Graecis ὀμμαίξειν.

Inde χαράσσειν est, secare, sulcare, proscindere. VII. 83. γαῖα χαρασσομένη σιδήρῳ, vomere scil. V. 52. πολυσχιδέων δὲ κελεύθων ἔδρανα καρχαρόδοπι βοῶν κεχάρακτο σιδήρῳ. Tum transfertur ad aquam, ut apud poetas latinos secare vel sulcare. Virgil Aen. IX. 103: Nereia Doto et Galatea secant spumantem pectore pontum. V. 158. et longa sulcant vada salsa carina. Ovid. ep. ex Ponto I. 4. 35. nos fragili vastum ligno sulcavimus aequor. Vid. Herm. ad Orph. Argon. v. 374. p. 815. Iacobs ad Agath. Epigr. LXVII. 2. Eodem modo Nonnus multis locis. XXVI. 180. ὀγκάσι θαλάσσια νῶτα χαράσσω. LX. 466. δουρατέφ κενεῶνι χαράξατε νῶτα θαλάσσης. II. 13. οὐκέτι, κῦμα χαράσσω, ὕδωρ λεύκασιν ἐρετροῖς. (conf. Virg. Aen. I. 35. spumas salis aere ruebant). item III. 46. M. Ev. Ioh. Z. 72. (confr. Herm. ad Orph. Arg. v. 706.) I. 54. ταύρου πλωτὸς ὄνυξ ἐχάραξε ἄψορον ὕδωρ. adde XXIII. 127. XXVI. 238. XLI. 114. νηχομένη ἀνέκοπτε χαρασσομένην ἄλα ταρσῶ. conf. X. 170. XLIII. 200. τριχθαδίη γλωχῆν θαλάσσια νῶτα χαράττων: quam formam verbi

atticam cur Graefius hoc uno loco servavit, non intelligo. XXIII. 141. ξείνην ναυτιλίην ψευδήμονε νηὶ χαράσσω (de miro traiciendi fluminis artificio.) XX. 157. Τανταλίδης (Pelops) ἱππῆλατον οἶδμα χαράσσω. *πελάσσει τανταλίδης οἶδμα χαράσσει* (vulgata est *πελάσσει τανταλίδης οἶδμα χαράσσει*)

Inde signare imprimendo vestigia alicuius rei; velut I. 96. μὴ διὰ πόντου χαράσσεται ἄλλος ἀμάξης. X. 404. ἐκ δαπέδου δὲ ἄκρα χαράσσομένοιο (de solo leviter percusso pedibus.) μετάρσιον ἔχνος αἰείρας: quod recte Graefius pro ἐρείσσας scribi iussit. V. 236. δεδάηκε ὑπὲρ ψαμιάσοιο. . . . Σηρῶν πρῶτον ἀτρίπτω (vulgata est ἀτρίπτω, pro qua Scalig. reponi iussit ἀστρίπτω. ἀτρίπτω Graef. Vid. Anthol. Palat. VII. nr. 409. p. 317.) κεχαραγμένον ἔχνος ἀρούρη. Conf. XXXVII. 368. κεκόνιστο πέδω κεχαραγμένους ἀγκῶν, i. e. nisi fallor, cubitus solo attritus. Nonnus imitatus est Hom. II. XXIII. 395. sq. ἀγκῶνάς τε περιδούφθη cet. XLIII. 28. Σηγαλέω χροῖός ἀκρα λέων ἔχαράξαστο τασσῶ. adde XLVII. 240. Imprimis de dentibus impressis. V. 329. ἔχαράξεν (κύνες) ἔσμον ὀδόντων. (conf. Ovid. Metam. III. 236.: cetera turba coit confertque in corpore dentes. Tryph. v. 73. et Wernick. ad h. l. Hor. C. I. 13. 12.) IV. 361. τὸν δὲ διαφορήσεντι τυχῶν ἔχαράξεν ὀδόντι. (conf. Ovid. Metam. III. 48. Apollod. III. 4,1.) XXV. 463. ὄγμω πουλυόδοντι παρηίδος ἀκρα χαράξας. Itaque omnino lacerare, laedere, vulnerare, velut V. 376. πενθαλέοις ὀνύχεσσι εἰς ἔχαράξε παρειάς. adde XXXIII. 13. XVIII. 333. XXIV. 182. XVI. 352. XXXVII. 412. II. 300. ἤπατος αὐτοφύτοι χαράσσομένοιο. (Promethei iecur renascens ab aquila dilaniatum esse ait.) — XXII. 246. XXIX. 77. χαράσσετο μηρός οἴστῳ. XVIII. 184. λέων. . . . γυναικῶν αἰμάσσω ὀνύχεσσι, χαράσσομένων δὲ γυναικῶν cet. Conf. XIV. 379. IV. 369. 446. (ἄλλον βαλὼν ἔχαράξαστο πέτρῳ.) XXXIX. 305. XXII. 292. (ubi recte pro χαράξει et Falkenburgii χαράσσει Hermann. χαράξει restituit.) XIV. 385. XXXIV. 288. XXII. 235: quo loco pro κεκόνιστο Graefius dubitanter suadet legendum ἐλέλιτο.) XXIX. 314. XXXII. 272. μάζον κεχαραγμένους (recte enim ita Graefius pro κεχαραγμένους scripsit) ἀκρον ἀκωκῆ. Huc referenda fortasse etiam illa: XVII. 367. ἄλλῃ χεῖρα πέλασσε καὶ ἔλκεα ἀκρα χαράξας, ἵψ φαρμακόμεντι σεσηπότα τάμνε μαχαίρη. (conf. Hom. II. XI. 844.) Inde χαράσσειν est fodere, pungere velut aculeis, stimulis. XXXVI. 372. ἠνίοχος εἶν ἐλέλιξεν ἱμάσθην, κέντροις δέυτεροισιν ἀπειδέα νῦτα (ἐλέφαντος) χαράσσω. XXXVII. 380. ταμείχοι κέντρον σῶν ὀδῶν ἕκτερον δέμας κεχαραγμένον ἵππων. Conf. XXI. 79. IV. 343. XLII. 177. βοῦν μύσῳ ἔχαράσσετο κέντρον. adde XI. 192. — XXV. 454. Τύλον ἰοβόλῳ κεχαραγμένον δέξει πότμῳ: est enim a dracone oppressus. II. 54. αὐχένα ζυγίῳ δεσμῶ κεχαραγμένου (collum iugo attritum). XLII. 22. Σερμόν ἀνασπύχων κεκαραγμ. αὐχένα Σηρῶν, de pantheris loquitur currui Bacchi iunctis. — Praeterea χαράσσειν est stringere: XXXVII. 206. οὐποτε τέγμα χαράσσειν. 245. ὅς δὲ χαράξαι ἀρχιφανῆς μενείανεν ὀπίστερον ἡμιχῆα. Denique χαράσσειν licet explicare scindere, discindere sive discutere his locis: II. 194. κυβιστητῆροι δὲ παλμῶ πυκνά διαῖσσοῦσα χαράσσομένων νεφελῶν ἀστεροπὴ σκίρτησεν. XVIII. 167. ὄρσρος βοδέοις ἀμαρύρμασιν ἔχαράξεν ὀμίχλην. XXXVII. 88. ὄρσρος ἐρευσιῶν ἀμαρύρμασιν ἔχαράξεν ὀμίχλην. Est ὄρσρος tempus gallicinii, sed posthac cum diluculi tempore saepe confusum. M. Ev. Joh. Z. 85. ὄρσρος ἔχαράξεν ὀμίχλην. XXII. 136. ἄλλ' ὅτε χιονόπεξα, χαράξαμένη ζόφον, ἦως ὄρσρον ἀμετρομένη

πορφύρετο πέτρῃ. Insolentius dictum est: XLV. 126. καὶ χροῖ δύσατο πέπλα, φαίν-
 τερα κικλάδας ἠοῦα, ἄρτι χαρασσομένης; Τυρέη πεπαλαγμένα κόχλη: sententia verbo-
 borum est plana: vestem murice tinctam aurora modo surgente splendidiorem ait fuisse:
 sed χαρασσομένης tam nude positum aliquid habet offensionis.

τύπος Τύπος vox non homerica, qua Nonnus admodum delectatus est; qui utrum in fre-
 quentanda hac voce novi testamenti, id quod Cunaeus opinatus est (animadvers. p. 8),
 an recentiorum scriptorum auctoritatem — quamquam nec in veterum tragicorum fabulis
 desunt, quae Nonnum imitatum esse haud iniuria dicas — secutus sit, mihi non liquet.
 Est autem τύπος forma, figura, species adumbrata, simulacrum, nota ad
 exemplum aliquod expressa. Τύπον et τύψ multīs locis valent fere id, quod
 instar, more modoque. Atque hoc ipso loco προχοαῖς κεχάρακτο τύπος χροῦς i. e.
 forma corporis sive imago unda tanquam speculo reddebatur. XLVIII. 585. εἰς τύπον
 αὐτοτέλειστον ἰδὼν μορφούμενου ὕδωρ. poeta loquitur de Narcisso, qui suam ipsius
 imaginem ex aqua relucens conspicatus, visae correptus imagine formae spem sine
 corpore amat: corpus putat esse, quod umbra est (Ovid. Metam. III. 416 sq.). XLI.
 63. οὐ τύπον ἀργίον εἶχον Ἐρεχθῆος et 59. Κέκροπος οὐ τύπον εἶχον i. e. forma cor-
 poris similes non erant Erechtheo, Cecropi. I. 100. οὐ βοῦ χερσαίῃ τύπον εἶκελον
 εἰνάλιος βοῦς ἔλλαχεν (conf. Opp. Halieut. I. 103. Ovid. Halieut. 94.) I. 26. εἰ δέμας
 ἰσαζοῖτο τύψ σουός: quo loco Cunaeus Nonnum exagitat, quod τύψ σουός pro σουῖ
 dixerit: esse enim τύπον σουός non aprum, sed simile quid apri. At τύπος est ty-
 pus sive figura seu forma: id intelligi voluit Nonnus. potuit brevior esse: nec ta-
 men est, cur hoc nomine acerbius reprehendatur. IV. 71. τύπον οὐρανίῳ μετα-
 λάξασα προσώπου Πισινόῃ δέμας ἴσον εἴσχετο. i. e. divina forma exuta induit fa-
 ciem Pisinoes similem. De hoc poetae commento vid. Köhler. comment. de Dionys.
 p. 9. XXVI. 310. elephas τύπον εὐρυμέτωπον ἐχιδναίῳ καθήνου εἶλε: sic Grae-
 fuis quidem: libr. edd. εἶχε. (conf. Opp. Cyneg. II. 519. 523.) XXXII. 107. Ἐρεν-
 νύς ἄλλοτε θηρείῳ τύπον φαίνουσα προσώπου cet. VII. 153. κερσέντι τύψ
 μορφούμενος ἀνήρ βλάστησεν κερσφόρον. Dionysum dicit. V. 529. βροτέῳ τύπον
 τεύξει προσώπου. XLIII. 231. Πρωτεύς γάρ μελέεσσι τύπον μιμηλὸν ὑφαιώνων πόρδα-
 λῆς εἶν ἐστίζατο μορφῆν i. e. Proteus fallacem induit pantherae formam (Hom. Odyss.
 IV. 457. πόρδαλις ἐγένετο). XLVI. 329. οὐκ ἄλλοῖον ἶδες τύπον υἱός: non vi-
 disti filii corpus in aliam formam mutatum. XXIX. 169. σκίοεις τύπος ἀνέρος est um-
 bra corporis. Omnino τύπος dicitur, quicquid formae similitudinem cum re aliqua
 habet. XXXII. 165. Ἄρης Μωδαίου (Indi) προμάχοιο φέρων τύπον. XXXVII. 167.
 Φαῦνος, Circes filius, ἔχων τύπον εἴης γενέταο τεκούσης, εἰς μέσον ἦλθεν ἀγῶνος φέρων
 τετράζυγας ἵππους: nam Sol quadrigis vehitur. II. 375. ἦν κορυσσομένης στρατιῆς
 τύπος i. e. instructae aciei speciem praebuit. XXX. 24. οὐποτε τοῖον ὄπωπα μόψου τύ-
 πον i. e. tale genus pugnae. XXXVI. 265. ξεῖνον ἶδον καὶ ἄπιστον ἐγὼ τύπον: novum
 quoddam et incredibile genus vidi; Lydias scil. Bacchi comites ait videri sibi alteram
 Amazonum gentem esse. XXVI. 342. Αἰθίοπες μεδέουσι τύπον τεχνήμονα χάριμης.
 Aethiopes enim proeliaturi detractas equinis capitibus pelles ad terrorem ac speciem
 inferendam suis capitibus imponunt. De re conf. Herodot. VII. 70. XXVIII. 193.

φέγγος οὐρανόιο τύπον φέρων, i. e. gestans simulacrum fulminis XX. 351. αἰθερίου πατάγοιο τύπον βρονταίου ἀκούων, i. e. tonitrus similem strepitum audiens. Adde XIV. 239. IX. 186.: quos locos supra attulimus. XL. 453. δουρατέου τοίχου πυκνὸν τύπον: lignei muri eiusque densi similitudinem habent asseres navium statuminibus adaptati. XII. 158 et XVII. 75. νέκταρος οὐρανόιο χυμόιο τύπον: quod nectar in coelo, in terris vinum est. Conf. XIV. 435. παπταίνω τύπον αἰθέρος, vinum dicit simile nectaris esse. XII. 334. τάφρον εὐσταφύλοιο τύπον ποιήσατο ληνοῦ, i. e. fossam pro torculari fecit (vid. Cunaeus animadverss. p. 110.). I. 458. φάτνης ἐτέρης τελέσω τύπον. XII. 336. τεύχων τύπον ἄφης, Bacchum dicit thyrso ad demetendas uvas more falcis vinitoriae posthac adhibitae usum esse. XI. 174. τύπον ποιήσε χαλεινοῦ. XXXII. 78. θαλάμου ποιητὸς ἔην τύπος: thalamum e nubibus circumfusus effinxit. (conf. Hom. II. XIV. 344 sq.) VIII. 289. ἐξέλονσα Ἡραίης τύπον εὐνῆς. Semele voluit Iovem ad suum concubitum venire talem, qualem Iunoni se praestaret. XVI. 65. μᾶλλον ἐγὼ Δαναῆς ποσειδῶν τύπον ὑγρὸν ἐρώτων, i. e. Bacchus mavult se mutatum in auream pluviam, in quam Iupiter conversus ad Danaen pervenit. XLVIII. 874. σοῖς θαλάμοις τύπον ἴσον ἔδρακεν Δύρη, i. e. Aura simili modo ac Nicaea a Baccho vitata est. VIII. 300. ἀλλὰ τί μοι βοέιοι γάμου τύπος ἢ υφετοῖο. illi Iovis sunt cum Europa, hi eiusdem cum Danae concubitus. Usus vocis υφετοῖο, cum aureus imber intelligatur, Cunaeus vehementer reprehendit animadverss. p. 48. XII. 71. Ἄργος (Ius custos) ἐς ὄρνειον εἶδος ἀμείψει, φαίδρον ἔχων βλεφάρων τύπον αἰόλου. De Argo, cui nomen erat Πανόπτης, conf. Q. Smyrn. X. 191. Apollod. II. 1, 2, 3. Ovid. Metam. I. 720. sq. XXXIII. 295. εἰς γάμον Ἰπποδαμείης ἀντίτυπον ποιήσε τύπου τροχοειδέε κρηφῶ. τύπος ἀντίτυπος longe aliud sonat atque apud Herod. I. 67., ubi vid. annot. Wessel. Nonnus haec ipse explicat XX. 161. XXXVII. 341. μιμητῶ τελέσας ἀπατήλιον ἄξονα κρηφῶ. conf. Schol. ad Apoll. Rhod. Argon. I. 752.: ἐμβολόντα κρηφῶν ἐμβολον ἐπὶ τοῦ ἀκραξονίου cet. XXXVI. 36. sagittae scuto per orbem infixae comparantur gruum volatui: καὶ γεράων μιμητὸς ἔην τύπος ἠεροφοίτης ἱπτάμενων στερφανηδόν. Ἀμοιβάλῃ παρὶ κλέκλων. XLVIII. 489. Πανός ἐγὼ δυσέρωτος ἔχω τύπον, i. e. similis sum Panos infelicibus amoribus. XXVI. 177. ἀδειήτω βοείη πλώουσι τύπῳ τεχνημίονι νηῶν: ex scutis simulacrum quoddam navium ad traiciendum flumen affabre fecerunt. IV. 102. μέμνημά ποτε τοῖον ἐγὼ τύπον: similem formam ac figuram me videre memini. conf. Eurip. Phoeniss. 430. Troad. 1066. VI. 23. τύπον ἄλλον ἔτευξεν. XXII. 147. Λυδῖος ἀνὴρ χρυσοφόσῃ Λακίοιο τύπον Γλαυκίοιο κομίζων. Nam Glauci auream fuisse loricae Homerus tradit II. VI. 236. XII. 105. παρὰ γέτονι τοίχῳ ποιετῆς κεχάρακτο τύπῳ Γανυμήθεος εἰκῶν: itaque imago Ganymedis arte depicta erat. M. Ev. Ioh. I. 73. ὄφιν — μεδέποντα δουρατέης τύπου ποιητὸν ἀκάνυθης: narrat de serpentis imagine, quam Moses in desertis Arabiae fabricatus est. XXXVIII. 180. XLI. 346. ἀστέρως ἠέριο φέρων τύπον, i. e. imaginem. XXXVIII. 425. ἔχει τύπον ἡμισοχῆος: similis est aurigae. Eod. libr. v. 83. Mercurius portentum interpretatus Bacchum φεραυγέα soli, Indum propter fuscum corporis colorem nocti comparans: αἰθέρι γάρ, αἰτ, τύπος οὗτος ὁμοίως: dicit, nisi fallor, huiusmodi esse coelestia. M. Ev. Ioh. O. 72. (εἰ) ἐρχομένου τύπον ἀνδρῶν ἥδος εἴχετε (v. Scr. εἴλετε) κόσμου i. e. si tales essetis,

quales plerique homines solent esse. II. 505. τοῖος ἔφυ φλογόεις νεφῶν τύπος, huiusmodi nubes sunt, ex quibus fulmina prorumpunt. XXV. 8. τελέσας τύπον μιμηλὸν Ὀμήρου, i. e. imitatus Homerum. XIII. 454. πολίτας ἔτρεφεν ἀστράπτοντας ἐπουρανίων τύπον ἀστρῶν, i. e. splendentes instar siderum. XVI. 280. δολόεις γάμος ἦεν ὄνειρείης τύπου εὐνῆς. XVIII. 253. ὄνυχες ἐδοχμώσαντο τύπον γαμψώνυχος ἄρπης. XVII. 245. ἀνεγνάμψθη δὲ οἱ αἰχμῇ μολίβου τύπον. (conf. Hom. II. VIII. 259. al. loc.) XXXIX. 135. ἐμπαύθη στόλος Ἰνδῶν εἰς λίνον ἐργομένων νεπόδων τύπον. conf. Hom. II. V. 487. Gryph. v. 674. sq. XLVI. 157. ὄρχηστῆρι τύπῳ κουφίζετο Πενθεύς. XVIII. 244. Σφιγγός τύπῳ βλοσυροῦ προσώπου. XXVI. 302. ἔχων ὀδόντας, ἀμητῆρι τύπῳ γαμψώνυχος ἄρπης. ἀμητῆρι τύπῳ dictum pro τύπῳ ἀμητείρας ἄρπης. M. Ev. Ioh. T. II. 110. τύπος ἤλων, est nota sive vestigium clavorum: quod idem legitur in Evangelio Ioanneo. conf. Sophocl. Phil. 29. — Pluralis denique reperitur XVIII. 79. καὶ φολίδων στικτοῖσι τύποις ἀμάγυσσεν ὀφίτης. conf. Orph. Lith. 458. Erat nimirum hic lapis maculis serpentis similibus distinctus. — Saepe τύπος et εἰκὼν pari gradu componuntur. XL. 416. ποικίλον εἶμα φέρων, τύπον αἰθέρος, εἰκόνα κόσμου. eod. libr. 351. ὦ πόλι πασιμέλουσα, τύπος χθονός, αἰθέρος εἰκὼν, συμφυέος τρίπλευρον ἔχεις τελαμῶνα θαλάσσης. de Tyro urbe in isthmo sita (conf. Movers Phoen. tom. II. I. p. 189. annot. I. et p. 230. sq.) poeta loquitur, de qua v. 423.: τίς θεός ἀστὺ πόλισσέ τύπῳ χθονός, εἰκὼν νήσου. atque v. 312. τύπον λάχε (πόλις) τοῖον Ὀλύμπιον, οἷον ὑφαίνει ἀγγιτελής λείπουσα μῆ γλωχῆνι σελήνῃ: urbis dicit formam similitudinem lunae dimidia habuisse. XLIII. 128. πόλις τελέσας ἱερὸν τύπον. ἱερὸν dedit Graefius ex coniect., sed se ait malle scriptum σταθερόν. ἦρον Falkenb.: vulgata est ἡ ἔρον: mihi unice ἱερὸν probatur. IV. 264. literas dicit γραπτὸν αἰγιηταῖο τύπον σιγῆς. eod. libr. v. 7. καὶ Ἄρεος κούρη ὄρδια δανεύουσα δάκτυλα παλμῷ Ἄρμονίην ἐκάλεσσε τύπῳ τεχνήμονι φωνῆς. de hac inani verborum copia vid. Cun. animadv. p. 43. Sententia est: tacita Harmoniam ad se venire iussit, non voce, sed digitorum gestu quid vellet significans. XIX. 204. οὐδὲ μὲν ἔγραφε φωνήεντι τύπῳ τιτηνίδα φύτλην. non Titanum quemquam, sed Ganymedem saltavit. (conf. Cun. animadverss. p. 130.) V. 106. Πολύμνια — φθεγγομένη παλάμησι σοφὸν τύπον ἔμφρονι σιγῇ, ὄμματα δανεύουσα. M. Ev. Ioh. K. 94. ἔργα τάπερ τελῶ — μάρτυρα ταῦτα πέλει καὶ φθέγγεται ἔμφρονι σιγῇ δηητὸν μερόπεσι λάλον τύπον: quae facio, manifesta argumenta sunt et tacita ipsa loquuntur. XXXIV. 276, ἐρώμανένν γυναικῶν νεύριασι ποιητοῖσι τύπον μιμήσατο κούρη, ὄμματα δανεύουσα, Chalcomede annuendo oculis more amantium mulierum se simulavit amore Morrhei captam. M. Ev. Ioh. T. 124. μὴ σχίζομεν τόνδε χιτῶνα θέσκελον ἀμφιπέποντα τύπον ξένου: erat enim haec vestis ἄρφαρος, ἐκ τῶν ἀνωθεν ὑφαντός δι' ὅλου, ut Ioannes tradit, itaque forma eius nova quaedam et insolita. XL. 146. ὠτειλῆς τύπον ἄλλον ἐσέδρακον: aliud genus vulneris vidi. XXIV. 38. Ἄσπρη Γοργείων βλοσυρὸν μίμημα καρῆνων φθεγγόμενον Λέβυν εὖρον ὁμοζυγῶν τύπον αὐλῶν. Conf. Ezech. Spanhem. ad Call. hymn. in Dian. 244. et 245. Schol. ad Pind. Pyth. XII. v. 8. χροός. χρώς, ut Lehrsus quaestt. epic. p. 193. sq. docet, nusquam apud veteres epicos corpus, sed cutem significat nec usquam de corpore ponitur, nisi si super-

ficies eius potissimum vel pars quaedam summi corporis intelligatur. Galenus *περὶ ἀγμάτων ὑπομνημα*. Tom. XVIII. p. II. p. 435. ed. Kuhn. *χρωῖτα*, inquit, *καλοῦσιν οἱ Ἴωνες ὃ ἦν τοῦ σώματος ἡμῶν σαρκῶδες, ἐν ᾧ μάλιστα γένηι τὸ δέγμα καὶ οἱ μύες εἰσίν, ἐφεξῆς δὲ οἱ ὑμένες καὶ σπλάγχνα*. Atque hanc vocabuli explicandi rationem auctoritate Homeri (II. XIX. 33. *Odys. II. 376.*) firmatam vult. Pindarus (Pyth. I. 55.) cum dicit, *Ποίαντος υἱὸς ἀσθενεῖ χρωτὶ βάνων*, haud dubie corpus intelligitur: a quo vocabuli usu tragici poetae non abhorruerunt quidem, sed plerumque vocem *χρῶς* ita usurparunt, ut aliquatenus propria eius vis eluceret. (conf. Eurip. *Hecub.* 402. Aeschyl. *Prometh. sol.* (reliq. ed. Schütz. tom. V. p. 125. *Ἥλιος ἀεὶ χρωτ' ἀδάνατον Ξερμοῖς ὕδατος μαλακοῦ προχοαῖς ἀναπαύει*.) Callimach. h. in Iovem 32. *τόδε χρῶα φαιδρύνασα*, ubi cutem sive corporis superficiem abluit seu, q. id. est, ubi corpus purgavit. Nonnus vim huius vocabuli et ad Homeri et ad recentiorum usum accomodavit. XXXV. 195. *χρῶα λούσεν* (conf. Eur. *Alc.* 160.). XLVIII. 121. *χρῶα πεπαλαγμείον ἐλαίῳ* (conf. Soph. *Antig.* 246.). IX. 281. *ὄλον χρῶα ἐχρῶσεν Ἴνους*. X. 269. *φίλτερον ἠβητῆρος ὄλου χρῶας*. VII. 265. *καὶ χρῶα πάντα δόκειε*. XLII. 64. *χρῶα κούρης ἰδέειν*. XXV. 461. *βροτέῳ ἐπὶ χρῶι*. (conf. Hesiod. *ἔργ. κ. ἡμ.* 418. quo tamen loco Lehrsius huic voci vim suam ac propriam reddidit.) XI. 31. *χρῶι φρονίσσονται*. XXVI. 104. *αὐαλέος ψαφαρῶ χρῶι*. (cf. Eurip. *Hec.* 402. *σὸν γέροντα χρωῖτα ἐλκῶσαι*.) M. Ev. Ioh. Σ. 137. *πάνχα φαγεῖν ἐδέξαν κάσαρῶ χρῶι*. XVI. 29. *ψαύων ἐρατοῦ χρῶας* (apud Eurip. *Med.* 1394. *μαλακοῦ χρωτὸς ψαῦσαι τέκνων* et 1064. *χρῶς est cutis sive superficies corporis; quae significatio et iis, quos modo attuli, et aliis, quos infra proferam, locis Nonnianis servari potest. At XVIII. 248. καὶ χρῶι μισσατίῳ διφυῆς ἀνεφαίνετο νύμφη*. XIII. 208. *Μυρμίδουες πρὶν ἔσαν μύρμηκες, εἰσόκεν αὐτῶν ἐκ χρῶας οὐτιδανόιο χαμαιγενές εἶδος ἀμείψας φέγτερον εἰς δέμας ἄλλο μετέπλασεν Ζεὺς*. (de qua fabula conf. Apollod. III. 12. 6. Ovid. *Met.* VII. 517. sq. Heyn. ad Apollod. p. 771. Köhler. comment. de Dionys. p. 36.) XXXII. 204. *πληγῆς ἰσχίον ἄκρον, ὅτη χρῶας ἤλακε δεσμῶ κοτύλη φύσις ἤρμισεν ἄξονα μηροῦ*. (conf. Hom. II. V. 305. sq.) M. Ev. Ioh. B. 102. *Χριστὸς νηὸν εἶπεν ἐοῦ χρῶας*: his igitur locis voce *χρῶς* corpus significari apparet. — Iam vero XXVIII. 48. *χρῶας ἠψατο αἰχμή*. 100. *ἔργος ᾤψεν ἔσω χρῶας*. XXIX. 84. *βέλος τρέπεν ἀπὸ χρῶας*. (Hom. II. IV. 130 sq.) 87. *καὶ χρῶας ἄργιον ἔλκος ἐρευθομένου διὰ μηροῦ Ἰμῆναος ἐδείκνυε Βάκχῳ*. XXXV. 58. *τεοῦ χρῶας ἔλκος ἀφάσσων*. nec minus XXI. 203. *περὶ χρῶι δέγμα συνάψας*. XLIV. 55. *ἀρσενά κομμήσας γυναικείῳ χρῶα πέπλῳ*. XIV. 358. *κατὰ χρῶας στικτὰ ἐνεδύσατο δέγματα νεβρῶν*. XLVI. 111. *καὶ χρῶι ποικιλόνωτον πέπλον ἐδύσατο*. (conf. Soph. *Trachin.* 605. Eurip. *Bacch.* 776.) M. Ev. Ioh. Φ. 39. *χρῶα πέπλῳ πετύκαστο*. Ζ. 68. *Ὀμίχλη (Νοx) χρῶι ποικιλόνωτον ἐπισφίγξασα χιτῶνα*. Τ. 9. *καὶ μὲν ἀνεχλαίνωσαν ἐπὶ χρῶι πέπλα βάλλοντες* (Eurip. *Bacch.* 785.) Ν. 19. *καὶ χρῶας ἀπέδηκε χιτῶνας*: manifestum est, Nonnum his locis vestigia Homeri et Euripidis legisse. — XLII. 79. *οὐ χρῶας ἀντιτύποι διαυγῆι μιάττυρι χαλκῶ μιμηλῆς ἐγέλασσαν ἐς ἀπυρρον εἶδος ὀπωπῆς*: aeneum speculum dicit poeta formam corporis reddens. M. Ev. Ioh. Σ. 83. *καὶ οἱ δέσκαλον εἶδος ἐμοῦ χρῶας αὐτίκα δείξω*. Verba Evangelistae sunt καὶ ἐμφανίσω αὐτῶ ἐμαυτόν: quae verba Nonnus ita explicavit, ut ambiguitatem verbi ἐμφανίσω

αουδάριον est, aliud linteum. — Deinde *μίτρη* est cingulum muliebre: sed saepenumero ad significandam virginitatem traducitur, ita ut *λύειν μίτρη* idem valeat, quod *διαπαρδενεύειν*. Conf. Spanhem. ad Callim. hymn. in Iov. v. 21. XIV. 167. Bacchus virginali habitu indutus *καὶ οἰάπερ ἄμια κορείης* (vide Iacobs ad Paul. Silent. Epigr. XVI. I.), *πορφυρέην λαγόνεσσι συνήρμοσε κυκλάδα μίτρη*. Atque contemtim XX. 230. Bacchi *μίτρη* *Ἐῆλος ἐπ' ἰξυῖ κυκλάς* appellatur. At de virginali zona XLVIII. 374. *πάλιν δ' ἐνδυνε χιτῶνα καὶ καθαραῖς λαγόνεσσι τὸ δεύτερον ἤρμοσε μίτρη ἀχρυσμένη*. XXV. 249. *μίτρη Ἰππολύτης ἐλαχεῖα*. Detrectat poeta illo loco certamina et virtutem Herculis, ut res a Baccho gestae herculeis laboribus anteponantur. Ceterum *ζωστήρα*, quo tum ab Hercule spoliata est, Hippolyte, Amazonum regina, accepisse a Marte dicitur. Conf. omnino Heyn. ad Apollod. II. 5. 9. — Iam vero de cingulo, virginitatis servatae aut ereptae indicio; VI. 260. *Ἠχώ ἀρχαίης φόβον ἄλλον ἀμειβομένη περὶ μίτρης*. i. e. de virginitate metuit, ne, ut olim a Pane, ita tum a Neptuno tentaretur. VIII. 282. *ἔθνα δὲ μίτρης λισσομένη* (Semele) *φλογέοντας εἰὺς δέξατο φονῆας*. Eod. libr. 214. *μὴ κρύπτει τῆς συλήτορα μίτρης*. XLVIII. 818. *καὶ σὺ (Aura) πόθεν πῖες οἶνον ἐμῆς συλήτορα μίτρης*. (conf. v. 876.). 448. *Αὐρῆ οὐκέτι παρθένος ἔσται καὶ μιν ἐσαθρήσειας δάκρυσσι ὀδυρομένην ἐτι μίτρη* sc. ereptam virginitatem lugebit Aura. 461. *ἀμφὶ δὲ μίτρη παρθενικῆς (Auræ) ἐλέλιξεν ἱμάσθηλην Ἀθρήστεια*, insolentiam nimirum huius virginis punitura. 403. *Ἄρτεμι ἀέξε σκορπίον ἄλλον, ποιητόρα μίτρης*. i. e. virginitatis tentatae ab Orione. de scorpione Dianae vindice vid. Schol. ad Arat. Ph. 322. extr. et interprett. ad Hyg. fab. 195. XLII. 119. *φυλάσσο μὴ σέο μίτρη ψευδαλέος λύσειε*. (vid. Callim. h. in Iov. 21. et ad h. l. Meurs. Apoll. Rhod. I. 288. et schol. ad h. l. Bion. Europ. 75. 165.) 392. *ἀφειδήσασα μίτρης ἀμφεπε Βάκχον*. XVI. 268. *ἄτρεμας ἄκρον ἐρύσσας δεσμοῖν ἀσυλήτοιο φυλάκτορα λύσατο μίτρης*. 351. *εἶδε καὶ αὐτὴν μίτρη παρθενίην γαμῆς πληθοῦσαν ἐφόρη*, postquam vis illata est. XII. 387. *ὃς δὲ μῆδης δεδονημένος οἴστρω παρθενικῆς ἀγάμοιο σαόφρονος ἤφατο μίτρης: σαόφρων*. i. e. casta, pudica. XXXVI. 67. *ἀλλὸ καὶ αὐτῆς λήγε σαοφρονέουσα σαόφρονος εἴνεκα μίτρης*. XL. 539. *ὣν (παρθένων) ἐπὶ μίτρη θερμός Ἔρωσ κεχόλωτο*. XXXIII. 369. *ὑμετέρης γὰρ φουρόν ἔχεις ὄφειν χραισμημάτι μίτρης*, serpentibus enim ab omni atrectatione defendebantur Bacchae. Graefius pro *χραισμημάτι* videtur maluisse repositum *χραισμητόρα*. Nec iniuria ei vox *χραισμημάτι* suspecta erat. *χραισμημα* enim hoc uno loco apud Nonnum reperitur, *χραισμητῶ* autem frequens est. Conf. XIII. 409. XX. 76. XXI. 130. XLIV. 362. M. Ev. Ioh. Γ. 81. 161. E. 152. H. 90. E. 98. Nec tamen quidquam mutatum malim. Ceterum eadem res commemoratur XV. 79. *Ἴνδῶν τις Βάκχην ἀτάσθαλον εἰς γάμον ἔλκων (i. e. vim ei illaturus) σφίγγεν ὑπὲρ δαπέδοιο, τανυσσάμενος δὲ κονίη χερσίν ἀπεσφρηγίσσατο μίτρη, ἐλπιδὶ μαυροδίη πεφορημένος. ἐξαπίνης γὰρ ὄρθιος εἶπε δράκων ὑποκόλπιος, ἰξυῖ γείτων, δυσμένος δ' ἤϊξε κατ' αὐχένος, ἀμφὶ δὲ δειροῦ οὐραίας ἐλίκεσσιν ἀνέπλεκε κυκλάδα μίτρη*, i. e. spiris teretem fasciam collo hostili circumdedit. — Deinde *μίτρη* strophium est sive fascia pectoralis, qua mulieres papillas obtegere earumque tumorem coercere solebant. XLVIII. 659. *ἤρμοσε κυκλάδα μίτρη, στέφνα πάλιν σκίῳσα*. XLII. 452. *πολυπλεκέεσσι δὲ δεσμοῖς μαζῶν κρυ-*

προμένων φθουρήν ἐπεμέμεφετο μίτρον. I. 347. *Iupiter*: ἀπό στέροιο δὲ ὑύμφης (Euporae) μίτρον πρῶτον ἔλυσε περίτροχον, ὡς ἀέκων δὲ οὐδαλέην ἐβλεψεν ἀκαμπέος ἀντυγα μαζοῦ. Cuius loci simillima sunt, quae leguntur XLII. 67. ἰσταμένης δὲ (Be-roes) στηθεῖ χεῖρα πέλασσε δυσίμερον, ἀκρα δὲ μίτρος ὡς ἀέκων ἐβλεψε, Bacchus scil. XXX. 217. οὐδ' ἔλευφεν περὶ στέροισιν, ἴσον τροχοειδέϊ μήλῳ, μαζόν (caesae Cōdonae bacchae) ἰδὼν, ἀκαμπέα κέντροα μίτρος. *Morrheus* in hac re dissimillimus est *Achillis* apud *Quint. Smyrn.* I. 669.: is enim *Penthesileae* a se *caesae* formam contemplatus maximo dolore afficitur. V. 605. σφιγγομένην στέροιοι σαόφρονα λύσατο μίτρον. XV. 260. sq. ὄφρα με μαζῶ χιονέω πέλασσε σαόφρονος ἔκτοσι μίτρος: itemque XLVIII. 654. I. 109. ὡς φραμένη πετάλοισι νόσῃ ποήσατο μίτρον καὶ χλοεῦζ ζωστήρι κατέσκεπεν ἀντυγα μαζῶν. (Conf. *Jacobs* annot. ad *Marc. Argent. epigr.* XX. v. 4.) Ac simili modo μίτρον et ζωστήρι vices alternant. V. 312. Ἄρτεμις ἀρπάξασα σὺν εἴματι κυκλάδα μίτρον παρθενίῳ ζωστήρι σαόφρονας ἔσκεπε μαζούς. XLVI. 112. στηθεα μιτροῦσας βασιλήϊα κυκλάδε μίτρον. μίτρον dedit *Graefius* de coniectura pro τέχνη, quam scripturam *Schoenius* tuetur (vid. commentat. supra commemorat. p. 138.) provocans ad ea, quae leguntur XLIII. 270.; quem ipsum locum *Graefius* attulit: at rerum discrepantia *Graefium* haud dubie movit, ut hoc loco vocem τέχνη expelleret. *Strophium* puto intelligi XXVI. 125., ubi *Tectaphi* filia pietate excellens (de ipsa re, quae hoc loco enarratur, vid. *Köhl.* comment. de *Dionys.* p. 59.) custodibus dicit: εἰ νόος ὑμῶν ἀπιστος, ἀμεμέφρα λύσατε μίτρον. i. e. excutite sinum, ut videatis, nihil me attulisse, quo vita patris sustentaretur. XXXI. 201. κροτὸν ἀεράζουσα πόδου δελξίφρονα μίτρον et 271. δός μοι κροτὸν ἱμάντα, τήν παρθελγέα μίτρον. Imitatus est *Nonnus* *Homerum* II. XIV. 198. et 214.: ἦ καὶ ἀπὸ στηθεσφιν ἔλυσατο κροτὸν ἱμάντα, ποικίλον. Nec ea, quae XXXII. 29. *Nonnus* dicit, καὶ λαρόνας στεφανηδὸν ἀήθεϊ δήσατο κροτῶ, dubitationem possunt afferre, quin apud *Homerum* *strophium* intelligatur. Vid. *Heyn.* Excurs. de *Veneris* cesto. Denique *Hiems* XI. 494. χιονέη στηθεα παρηνέντα κατέσκεπε λευκάδι μίτρον. — Tum μίτρον fasciam significat crinibus insertam (conf. *Luc. Dial.* XVIII.) XII. 154. καὶ σκολήν πλοκάμοιο λεπῶν ὀφιώδεα μίτρον στέμματα βοτρούοντα περιπλέξας σέο χαιτή. Conf. *Eurip. Bacch.* 105. sqq. VII. 102. Bacchus ὡς στέφος, ἔρηρησθηρα περὶ πλοκάμοισιν ἐλέξας σήμαδ' ἔης νεότητος ἔχων ὀφιώδεα μίτρον. vid. *Schoen.* comment. p. 108. sq. — Iam vero apud *Nonnum* quicquid cingit aliquam rem vel ei circumdatur, μίτρον dicitur. II. 249. πέξα Ὀκεανοῖο περιβάλλεται ἀντυγα κόσμου, ζωσαμένη στεφανηδὸν ὄλην χροῖνα κυκλάδε μίτρον. M. Ev. Ioh. E. 5.; ubi verba *Evangelistae*, κολυμβήθρα ἢ ἐπιλεγομένη *Βηθεσδά* πέντε στοάς ἔχουσα, hoc modo reddit: ἦν δὲ τις ἀσάμωδος πέντε ταυπλευροῖσιν ὑπ' αἰθούσῃσι μελάθρου δαδαλέων ζωσθεῖσα λίθων ὑψάντυγι μίτρον. XL. 318. Τύρος εἰν ἀλὶ κεῖται, εἰς χροῖνα μοιρηθεῖσα, συναπτομένη δὲ θαλάσση τριχθαδίας λαρόνεσσι μίαν ξυνώσατο μίτρον. μοιρώα apud *Nonnum* praeter hunc locum legitur XLVIII. 385. Νέμεσις τέτραχα μοιρηθέντα διόρχεται ἔδρανα κόσμου. i. e. quadrifariam divisas mundi sedes seu regiones perlustrat. De *Tyri* situ vid. *Strabo* p. 757.: συνήπται δὲ χώματι πρὸς τήν ἠπείρου et *Achill. Tat.* II. 114. ἐρίξει δὲ περὶ ταύτης γῆ καὶ θαλάσση ceter. est autem operae peritium totum hunc locum cum *Nonniano* conferre. Quod sequitur vocabulum, λαρών,

explicavit Naekius (comment. adiecta indici schol. p. m. hib. 1836. hab. pag. 5.) Est autem τριχσαδίας λαγόνεσσι dativus pendens ex verbo ξυνώσατο. Conf. X. 313. XIII. 130. XXXIII. 268. XXXV. 135. XLIV. 100. M. Ev. Ioh. Δ. 159. ε. 3, quibus locis omnibus est activum positum, significans communicare aliquid cum aliquo. medium autem III. 385. XXXVI. 109. XL. 541. XLII. 13. M. Ev. Ioh. A. 143. aliis locis; significat autem fere idem, quod activum, communicare vel iungere aliquid cum aliqua re sive attribuere aliq. alicui. Sententia igitur illorum verborum est: Tyrus in mari quidem sita, sed eadem terrae continentis pars est: at, utpote cum mari connexa, unum cingulum tribus commune lateribus (tres portus dicit intelligi Movers. Tom. II. P. 1. p. 114.) coniunxit (conf. v. 352.): itaque ex tribus partibus cincta est mari, nec tamen undique circumfusa, quippe cum una ex parte terrae continenti coniuncta sit. — II. 20. ἀλλὰ καλυπτομένου νεφέων σκιοειδῆ μίτρῃ — δόναξ σβήγησε νομῆος. Comparare licet Iuven. XIV. 294.: nil fascia nigra minatur. XXXVII. 55. ὦν (ἴππων) ἀπὸ δημῶν ἅπαντα λαβῶν ἀμφὶ νέκυν στορέσας κυκλώσατο πύονα μίτρην. Hom. II. XXIII. 167. ἐκ δ' ἄρα πάντων δημῶν ἔλῶν ἐκάλυψε νέκυν μεγάθυμος Ἀχιλλεύς ἐς πόδας ἐκ κεφαλῆς: quem locum iam attulit Dan. Heinsius (diss. p. 189.), cui vehementer displicet insolentia verborum πύονα μίτρην, sed hactenus de hac voce.

v. 128. στέρνα κούρης. Pauca etiam de voce στέρνα. Homericam eam esse, constat. Atque apud Homerum singularis numerus pluribus locis, quam pluralis reperitur nec tamen pluralis non est positus, ubi de unius hominis pectore sermo est, velut II. XIII. 290. Nonnus quoque modo plurali, modo singulari numero utitur, velut VII. 263. στέρνα κούρης. XXI. 9. ἴστέρνα Νύμφης. XXX. 216. περὶ (Κωδώνης) στέρνοις μαζὸν ἰδῶν (conf. Hom. II. IV. 528.). XLVIII. 352. διὰ στέρνων (Dianae): at XXXV. 159. ἀπὸ στέρνοιο. XLV. 339. ἀμφὶ δὲ στέρνοιο. XL. 107. στέρνον ὄλον. XXXII. 271. κατὰ λασιόιο (Homerus λασιόν στήθος vel κῆρ solet dicere). XLIII. 112. στέρνοιο μεσσατίοιο. XXVI. 252. κατὰ στέρνοιο. itemque XXXVI. 154. 209. XXVIII. 162. M. Ev. Ioh. Φ. 123. et his quidem locis de pectore humano: de equino autem XXXVII. 456. καὶ πολλὴς ἵππειοιο δὲ ἀσχένος ἔρῶσεν ἰδρῶς καὶ λασιόιο στέρνοιο. conf. Hom. II. XXIII. 508. — Deinde στέρνα urbis dicuntur XLI. 29. ἤχι πόλις τιταίνει στέρνα Ποσειδάωνι. Conf. Ernest. ad Callim. h. in Del. v. 48. Recte tamen Hermannus negat στέρνα γῆς homericæ locutioni οὐδ' αὖ ἀρούρης comparari posse: non ubera, sed pectus στέρνα dici. Itaque στέρνα γῆς sunt arva patentia (conf. Suid. s. h. v. et schol. ad Sophocl. Oed. Col. v. 687.), στέρνα πόλεως urbis ea pars, quae mare versus patet. Sunt, qui medias quasque partes rerum στέρνα dici putent, quippe cum in corpore humano hanc sedem pectus habeat.

καλύπτω. Vox frequens apud Homerum aliosque scriptores. Significat tegere, contegere. Dicitur de quovis corporis tegumento: XXVII. 210. δέμας θώρηκι καλύπτων. XX. 192. κερδαλέω θώρηκι καλύπτετο: Iris, ut falleret, Martis formam et habitum induerat. XXVII. 207.: Graefius Cunaeam (animadv. p. 140.) secutus pro vulgata νεβρίδα χαλκοχίτωνι καθάψατε Δηριάδη, cum dativus Δηριάδ. non concinat accusativis θρασύν et περίπλεχθέντα, reponit νεβρίδι χαλκοχίτωνι καλύψατε Δηριάδη, expulsa voce καθάψατε, quae per se proba est (conf. XI. 61. 233.). Scaliger opinatus

est lacunam esse. Ceterum conf. Hom. II. X. 29. III. 141. — XXVI. 159. τυφάλειη ἐκάλυπτε ἀντυγα κόρησ. II. 379. πῆληκες ἔσαν Τυφῶνι κολῶναι προῦνι καλυπτομένων κεφαλάων. Dein omnibus de armis, quibus corpus munitur. XXVIII. 59. μηκεδανῆ κεκάλυπτο κασιγνήτοιο βοείη. XXX. 51. ὄλον ἐκάλυπτε μαχητήν, ἀσπίδι πυργώσας δέμας ἀνέρος (conf. Hom. II. XVII. 128. et 132.). XVII. 266. οὐδὲ καλυπτομένου χροός ἤψατο Βακχιάς αἰχμητή, sc. corpus lorica tectum. XXXVII. 763. σάθησιν δὲ (δὲ enim pro τε scribendum esse, monuit Lehrs. quaest. ep. p. 298.) χιτῶνι εἰς μέσον ἐρρόωντο δέμας ἀμφω αἰχμητήσας. Itaque καλύπτειν est omnino contegere, operire, circumdare: XV. 99. ὕπνον λαύεις, νεβρίσι καλυπτομένη Διονύσου (conf. Hom. Odys. I. 443.). II. 349. οὐ δύναται πόλος οὗτος ὄλον Τυφῶνα καλύψαι, hoc, quod nunc est coelum, non potest Typhonis vastitatem capere. V. 22. κρέα ἡμὰ διατμήξας ἐκαλύψατο δίξυγι δημῷ. (conf. Hom. Odys. XVII. 241.) XXX. 93. Μορφέα δ' ἀοπάξας ζοφερῆ χλαίνωσεν δαίχλη, πορφυρῆ νεφέλη κεκαλυμμένα γυῖα καλύψας. Hermannus reponi iussit κεκακωμένα: quae vox nusquam apud Nonnum reperitur. Nam M. Ev. Ioh. E. 6. κεκακωμένος Sylburgius de coniectura dedit. Vulgata est ὅπη γε κεκαυμένος vel ὅπη κεκαῦμένος: utrumque est vitiosum. Vide Wernick. ad Tryph. v. 239. Fortasse βεβαρημένος ἀνήρ. conf. XXXVII. 544. ubi pro βεβαρημένον Graefius βεβαρημένον reposuit. Illo autem loco quin verba κεκαλυμμένα καλύψας ferri non possint, haud dubium est. Equidem κεκαφηότα γυῖα καλύψας (cf. II. 539.: θεομά καταψύχων κεκαφηότα γυῖα κεραυνῷ. Opp. Halieut. III. 113. τανυσθεῖς κῆται ἐπιτρέψας θανάτῳ κεκαφηότα γυῖα) et πορφυρῆς νεφέλης κεκαλυμμένα γυῖα καλύπτρας (conf. II. 175. 502.) conieci, magis, ut tentarem locum, quam sperans fore, ut his meis opinionibus eum sanarem. — XXXII. 34. μέτωπα καλύψατο πέπλῳ, i. e. velavit. M. Ev. Ioh. Δ. 171. καλυπτομένοιο προσώπου. I. 427. τί φάρεϊ χεῖρα καλύπτεις. XXXVIII. 83. ζόφος ἡμάλδυνε καλυπτομένης φάος ἡοῦς cet. Sententia est: nocte appetente lux diei absconditur: suborta rursus luce nox pellitur. XVII. 341. δάφνη (arbor) αἰδομένοις ἐνὶ φύλλοις ἐκάλυπτε νέφος ἰῶν, μὴ μιν ἴδη βελέσσειν οἴστευθεῖσαν Ἀπόλλων. Vulgata erat νέφος Ἰνδῶν. ἰῶν, quod Græfius dedit, Spitzner se coniecisse ait. Vid. de vers. Gr. her. p. 57. — Itaque καλύπτειν omnino est occultare, occultare et passivum καλύπτεσθαι latere, delitescere. XLVI. 192. Νύμφαι Ἀμαθουάδες με καλύψατε, μὴ με δαμάσση Ἀγαθή i. e. recipite me et occultite. — XV. 174. Νίκαία οὐδὲ μυχῷ καλύπτετο παρθενεῶνος. i. e. non in gynaeceo delitescere solebat. I. 148. αἰδέρος ἔντεα θῆκε μυχῷ κεκαλυμμένα πέτρης, abscondita fulmina dicit. XXVI. 110. χθονίῳ κεκάλυπτο βυθῷ πεπεδημένος ἀνήρ, scil. in carcerem subterraneum coniectus. XXI. 335. ἐν ἄλσοι φώριος Ἄρης χλοεροῖσι φυτῶν κεκάλυπτο κορύμβοις (abditus latebat). XXXII. 262. ἐν δὲ κολώναις ἀντὶ μύθου κεκάλυπτο. XXVII. 116. μινέντω Ἰνδῷ κεκαλυμμένος αἴδοπι κίστη. Erechtheus scil. dux Atheniensium, quem poeta narrat genus duxisse ab antiquo illo Erichthonio vel Erechtheo. (Vid. Heyn. ad Apoll. III. 14. 6. p. 837.). Eum in cistam absconditum Minerva Aglauro, Hersae et Pandroso, Cecropis filiabus, custodiendum tradidisse fertur. Conf. Ovid. Metam. II. 551. Illius igitur cistae barbarus rex ad irridendum Erechtheum mentionem infert. XII. 379. εἰ μὴ μιν φθαμένη (Νηῖς) βυθίῳ κεκάλυπτο ὄρεθρον, submersa scil. se in flumen

abdidit. itemque XII. 379. — I. 273. πόντιος Ἰλυόεντι λέων ἐκαλύπτετο κόλπῳ. XXIII. 31. ἀνέτελλε καλυπτομένην πτύχα μηροῦ, scil. in limo submersum femur. IX. 69. μηδὲ ἴδη κεκαλυμμένον. XXII. 110. εὐπετάλῳ παρὰ λόχημῃ ἀπροϊδῆ σκοπίαζε καλυπτόμενον λόχον ἀνδρῶν. Itaque καλύπτειν est obtegere, operire submergendo, obruendo; III. 216. Σιφονίης ἐκαλύπτετο νῦτα κολώνης. 307. χθῶν ὅτε κεύθετο πᾶσα κατάφροντος, ἄκρα δὲ πέτρης Θεσσαλίδος κεκαλυπτο. itemque 317.; superstagnante sc. aqua (conf. Hom. II. XII. 282.). XIII. 525. δῶμα λιπῶν ὄμβρῳ (aquis) κεκαλυμμένον. XXIII. 304. ὕδασιν αἰθέρος ἄστρα καλύψομεν. 291. ἠέλιον πυρόεντα φῶφ σβεσθήσῃ καλύψω. II. 645. ἐπεσούμενα (στροφάλιγγες ἀέλλης) ὀλκάδας καλύψαι, scil. κύμασι. XVII. 299. ποταμός σε (νέκυν) κάλυψε. Conf. eod. libro v. 77. φέεσθῳ κτεινομένους ἐκάλυψε. adde 178. XI. 455. XXXVIII. 68. XL. 122. XLIV. 165. 250. XXVII. 44. 104. XXXIX. 235. μέλαν ὕδωρ ἐκάλυπτεν σώματα νεκρῶν βένθεϊ φυκίοντι. (Conf. Hom. II. XXI. 321. XXIII. 218.) Nec quidquam magis tritum, quam locutio γαῖά τινα καλύπτει. i. e. aliquis humatus seu mortuus est. IX. 74. Αὐτομόην δὲ Φαιόντι σὺν νίεϊ γαῖα καλύψει. XII. 221. μορφῆν ὑμετέην (tuam) ἠδέσσατο γαῖα καλύψαι. XXVII. 51. ἐμὴ δὲ σε Γαῖα καλύψει. XXX. 206. παρὰ ξείνοισι χυτῆ κεκαλυπτο κοινῆ (conf. Hom. II. XIV. 114: qui versus a Zenodoto obelo notatus est. v. Lehrs. de Arist. stud. Homer. p. 109.) XLVI. 264. ἔργε, Κιθαίρων. ἀμφοτέρων δὲ νεκρὸν ἔχεις Πενθεῖα καὶ Ἀκταίωνα καλύπτεις. Translate καλύπτειν est condere, abscondere, obscurare. XI. 360. οὐ γὰρ ὀλέσσαι ὁ χρόνος οἶδεν ἔργα, καὶ εἰ μᾶζε πάντα καλύπτειν. Conf. Soph. Aiac. 637.: ἄπανδ' ὁ μακρὸς χρόνος φύει ἀθλῆα καὶ φανέντα κρύπτεται. XXI. 147. Bacchus nocturnis facibus καλύπτει καὶ μεγάλην περ εὐόσσαν ἀκτῖνα Σελήνης i. e. ἀμαυροῖ, ἀφανίζει (vid. Musgrav. et Herm. ad Soph. Oed. Col. v. 283.) XLI. 256. Σελήνη πλησιφαῆς ἄστρα καλύπτει. Sapph. reliqq. ἀστέρους μὲν ἀμφὶ καλὰν σελάναν ἄψ ἀποκρύπτουσι φαινόν εἶδος, ὅπποτ' ἂν πληθούσα μάλιστα λάμπη: quem locum iam Dillenburger ad Hor. C. I. 12. 48. attulit. M. Ev. Ioh. Δ. 169. δευτέρου οὐνόμα δέξο νεώτερον ἐπινυμῆν δὲ καλύψει πρεσβυτέην. i. e. obscurabit sive oblivioni dabit. Denique figurate dictum est σιγῆ καλύπτειν, silentio tegere sive reticere. M. Ev. Ioh. Γ. 106. ἔργα, τάπερ τελείει, κρυφίῃ κεκαλυμμένα σιγῆ. Pind. Nem. IX. 15. τετελεσμένον ἔσλον μὴ χαμαὶ σιγᾷ καλύψαι. Eurip. Hippolyt. 707. σιγῆ καλύψασ' ἄνδραδ' εἰσηκούσατε. Horat. Carm. IV. 9. 29. paullum sepultae distat inertiae celata virtus. II. 15. ταῦτα δὲ μυθοτόκου κραδῆς κεκαλυμμένα σιγῆ. H. 17. ἔργον ἀφηγήτῳ κεκαλυμμένον ἀχλύϊ σιγῆς. B. 120. ἦδεν ὅσα φρενὸς ἐνδοξεν ἀνήρ εἶχεν, ἀκηρύκτῳ κεκαλυμμένα φάρεϊ σιγῆς.

καταυγάζουσα δὲ λίμνην. Apud Apollon. Rhod. IV. 1248., οὐκ ἀπάνευθε καταυγασσάντο (var. scr. κατηυγ.) βοτήρα αἴθλιον, significat spectare, itemque apud Antipatr. Sidon. Ep. LII. 2. καὶ τὸν ἐπ' Ἀλφειῷ Ζῶνα κατηυγασάμην. Vox a recentioribus fere scriptoribus usurpata est. Apud Nonnum activum legitur praeter huius libri locum III. 58. ἠώς φάνη ἀντιπόρου οἶδμα καταυγάζουσα θαλάσσης i. e. mare collustrans. VIII. 321. Semele Iovi, ἐνθεον, inquit, εἶδος ἔχων ἐπὶ δέμνιον ἔρχεται Ἥρης, ἀστεροπαῖς γαμήησι καταυγάζων σέο νύμφην. Iupiter enim suis insignibus ornatus Iunonis thalamum intrare solebat. Itaque Semele ait Iovis coniugem fulgure collustrari. XVIII. 157. αἰόλα

φέγγει λεπτῷ ἄστρα καταυγάζων ἐμειλαίνετο δίχροος ἀήρ: stellae tenui luce micantes cum nocte appetente colluceant, poeta eas dicit crepusculi tempore illustrari. M. Ev. Ioh. A. 26. λόγος i. e. Christus πνευματικαῖς ἀκτίσι καταυγάζων φύσιν ἀνδρῶν. Verba Evangelistae sunt: ἦν τὸ φῶς τὸ ἀληθινόν, ὃ φωτίζει πάντα ἄνθρωπον: quia scil. lumen veritatis menti humanae attulit. XXXVII. 535. Εὐρυμέδων pugil certans cum Melisseo ἔκαμινεν ἀσχετον ἡελίοιο μένων ἀντύπιον αἰγλήν, ὄμμα καταυγάζοντος. i. e. in certamine solem adversum habuit, ut acies oculorum radiis eius praestringeretur. XLII. 73. χῶρον κύσε, ὅπη πόδα θῆκε παρθευική γοδόεντι καταυγάζουσα πεδίλω αὐτῶν, sc. χῶρον, intelligi voluit aut, id quod verisimilius est, καταυγ. vi verbi neutrius posuit, ut resplendens significaret. M. Ev. Ioh. Θ. 5., ubi verba Evangelistae ἔξει τὸ φῶς τῆς ζωῆς Nonnus hoc modo reddit: ἀλλὰ καταυγάζουσαι ἔχων ὁμόφοιτον ἐν αὐτῷ ζωῆς ἀπλανέος φάος ἔμπεδον. Vitium scripturae καταυγάζουσαι tolli debet. Coniectura καταυγάζει ἀνέχων nullo pacto ferenda est. καταυγάζουσαι Nansius emendando restituit. IX. 104. καὶ Διὸς αὐτοβόητος ἀπαγγέλλουσα λοχίην, μαρμαρυγῇ σελάγισε καταυγάζουσα προσώπου. i. e. Bacchum Iovis esse filium, iubar ex ore resplendens arguit. XV. 163. γηθόσυνος δὲ κοῦρον (Hymenaeum) ἐδόκετο Βάκχος τεύχεσιν ὑπινάλεοι καταυγάζοντα φορήσ. i. e. iuvenem scuto fulgentem aureo, quo exuerat hostem. — Ex his igitur locis intelligitur, Nonnum hoc verbum ita usurpasse, ut modo activi, modo neutrius verbi vim haberet. Media eius forma nusquam apud eum reperitur. Abstinet idem poeta simplici verbo αὐγάζω et αὐγάζομαι: de quo vid. Iacobs ad Antip. Thess. Epigr. LXIII. 2. et Ellendt. lexic. Sophocl.

λίμνη. conf. paullo infra v. 408. κυκλάδες ἀρκτοὶ Ἑσπερίη παρὰ λίμνη ἄβροχον ἶχνος ἔλουσαν ἀήθεος Ὠκεανοῖο. i. e. perturbato per Phaethontem rerum ordine Helice et Cynosura, metuentes aequore tingui i. e. nunquam occidere solitae, fluctibus Oceani immergebantur. λίμνη enim vox homerica lacum vel aquam stagnantem, dein fretum significat. Conf. Hom. II. XXIV. 79. et Odys. III. 1. ubi haec vox varie explicata est. vid. Nitzsch annot. ad h. l. Voss. Epist. mytholog. LV. p. 160. sq. Vetus enarrator ac Suidas non dubitarunt, quin v. λίμνη mare et ipsius Oceani aquam significaret. Atque Nonnus XLI. 32. pisces ἀλίτροφα πάσα λίμνης, maris greges vocat. XXXIII. 214. παρ' εὐόδρου στόμα λίμνης i. e. paludis. Denique lacum intelligi voluit. XIII. 65. Κώπας (conf. Hom. II. II. 501.) ὅπη περίπυστον ἀκούα ἐγχελεύων θρόπτειραν (de his verbis vid. Köhl. comm. de Dionys. p. 34.) ἐπώνυμον εἰσέτι λίμνην. Copaidem paludem dicit. VI. 253. ὑδρηλαὶ θύγατρος ἀποσπάδες Ὠκεανοῖο (conf. Hom. II. XXI. 196.) λίμναι ἐκόυφίζοντο καὶ ἡέρι νέετρου ὕδωρ κρονοὶ ἀκοντιστήρες ἀνέβλυον Ὠκεανοῖο, tempore nimirum diluvii. Lacum Tiberiadis commemorat M. Ev. Ioann. Z. 86. ζαδῆ παρὰ λίμνη. Φ. 21. ἡδᾶδι λίμνη (i. e. ubi commorari solebat Christus) et 14 στόμα λίμνης ἀρχαίου ἐπέπλεον.

v. 129. ἀργυρέων μαζῶν. Eodem modo XVII. 218. ἀργυρον αὐτυγα μαζοῦ. Reperitur enim duplex huius adiectivi forma, ἀργύρεος et ἀργυρος. Hom. II. XXIV. 621. Odys. X. 85. ἀργυρα μῆλα νομεύειν. II. V. 230. Odys. X. 543. ἀργύρεον φᾶρος, itemque II. XVIII. 50. Nereidum domus σπέος ἀργύρεον appellatur. Est autem ἀργύρεος splendidus, candidus, albus. Significationem et usum huius vocis diligen-

tissime exposuit Köchly ad Quint. Smyrn. I. 142. Et apud Nonnum quidem de vestitu dictum est XL. 107. ἀργυρέου χιτῶνος. XLVIII. 108. ἀργυρέῳ εἵματι, ubi varia scriptura ἀργυρέω: de qua varietate paullo infra dicemus. XL. 303. ἀργυρον Βαβυλωνίδος ἔργον Ἀράχνης sc. πέπλον: deinde de lacte: XIV. 420. οὐ γλάγος αἰγῶν ἀργυρον. Tum vero de aliis rebus splendidibus. XLIV. 192. ἄρματος ἀργυρέοιο κυβερνήτεω Σελήνῃ. XL. 382. ζυγόν ἀργυρον, de iugo currus, quo Sol vehitur. Conf. Orph. reliqq. VII. 12.: ἀργυρέας ἐναλίγκιον ἀκτίνεσσιν πέπλον φουνίκεον i. e. splendidis radiis Solis. I. 186. αἰθέρος ἀργυρον αἰγλήν. — De lebetē vel pelvi XXXIII. 98. ἀργυρος ἐσμαράγησε λέβητος ἐπὶ νίκιον ἤχῳ: de pulvere, IV. 345. ἀργυρέην κοινήν. XVII. 206. ἀργυρέη κόνις. Denique de partibus corporis humani, ut latine dicitur candidus, nitidus, velut de humeris: X. 182. XVIII. 350. ἐπ' ἀργυρέων ὤμων (conf. Quint. Smyrn. XII. 536.: ὅμοιος ἀργυρέοισι): de ore seu vultu: I. 527. ἐς ἀργυρα κύκλα προσώπου; de bacchae cervice: XXXIV. 209. ἀργυρον αὐχένα Βάκχης, omnino de membris seu corpore: οὐδέτι τῶν μελέων ἀμαρύνσεται ἀργυρος αἰγλή. Conf. Apoll. Rhod. IV. 1407. χεῖρας ἀργυρέας. — Ceterum saepe ἀργυρέος et ἀργύρεος inter se commutantur. Vide Wernicke ad Tryphiod. v. 73. Atque XLVIII. 110. varietas scripturae est ἀργύρεον, idemque Schrad. ad Mus. p. 262. reponi voluit XXXVIII. 129. quod tamen, ut recte monuit Graefius, minime est necessarium. At XII. 312. ἄλλον δ' ἀρτιχάρακτος ἐπέστρεχεν ὄμφακι καρπῷ βότρυος ἀργυρέοιο μέλας αὐτόστυτος ἀήρ Köchly ad Quint. Smyrn. I. 142. reponi iubet ἀργυρέοιο: quae coniectura si non certa, admodum tamen probabilis est. Idem vir doctus X. 190. νισσομένου δὲ ἐκ ποδῶς ἀργυρέοιο pro ἀργυρέοιο scribendum censet. at adiectivum ἀργυρόπεζα facit, ut de hac coniectura dubitem. Minus etiam mihi probatur ἄργρα, quod Köchly coniecit XLVII. 109. Locus hic est: φιλακρήτοις δὲ κυπέλλοις ἀργυρα πορφύροντο παρήϊα. Graefius ἀργυρα παρήϊα, inquit, de hominibus rusticis satis absurdum est: frustra tamen probabilem emendationem circumspectio. An ἄτρεμα πορφύροντο: sensim sensimque? Poterat ἐγγλοα, si pallorem exprimere volebat. Haec Graefius. ἄτρεμα vix erit cui probetur. ἐγγλοα commendationem habet sententiae: sed nimis a scripturae similitudine discedit: propius foret ἄχροα. Nec ἄρσενια παρήϊα placet i. e. ἀνδρῶν παρήϊα, etsi ἄρσενια κάθηνα poeta dixit XIV. 396. XXIX. 227 et I. 84. παρθευίην πόφρυγε παρήϊδα.

εὐκύκλος. i. e. pulchre orbiculatus vel rotundus, vox homerica, in Iliade vocis ἀσπίδος, in Odyssea v. ἀπήρης epitheton. Nonnus idem tribuit scuto: XV. 149. εὐκύκλοιο λαβῶν τελαμῶνα βοσίης, itemque XLI. 169.: dein nervo seu chordae arcus: XXII. 53. εὐκύκλον ἔην ἀπελύσατο νευρῆν. (cf. Hom. II. IV. 124. τόξον κυκλοτερές): sphaerae: VI. 64. φεράτων εὐκύκλον ἀείρας σφαῖραν ἐλισσομένην, τύπον αἰθέρος παρῆσθηκε: mensae: V. 33.: urnae vel situlae: III. 87. οἶα γυνή ἀφυσσαμένη πόμα γαίης, ἀργυρέην εὐκύκλον ἐκούφισε κάλπιν ἀγοστῶ.: monili: XXXIII. 71. εὐκύκλον ἀείρας χρύσεον ὄρμιον ἔσθηκε: ori seu oculis: XXXII. 266. ἐχάζετο Ἐρεχθεύς, ἐντροπαλιζομένην ταπύων εὐκύκλον ὄπωπῆν. (ad imitationem Homeri II. XI. 547. haec composita esse, non est, quod moneam.) Deinde εὐκύκλον dicit orbem mammarum eo ipso loco, cui haec omnia adstruximus (conf. XLVIII. 115. τροχόεσσαν ἔτυν μι-

ζῶν.); astrorum motum ac conversionem: XXXVIII. 32. εὐκύκλον ἴτυν ἀστρῶν. lunae orbem: XXVI. 109. ἀμμοφοῖν ἠελίοιο καὶ εὐκύκλιοιο σελήνης. Denique XXXIV. 42. μαρμαρυγὴν εὐκύκλον ἀκοντίζουσα σελήνη: ad splendorem lunae Nonnus transtulit, quod ipsius lunae est epitheton; plenam enim dicit lunam. conf. Horat. I. 12. 48.

ἴτυς φοινίσσεται μαζῶν. De verbo φοινίσσειν dixi ad vers. 118. part. II. p. 13. Restat, ut, quos ibi praetermisi locos, eos nunc afferam. XXXIV. 277. καὶ ἠθάδος ἔκτοδε μίτρης λευκός ἐρευθιῶντι χιτῶν φοινίσσεται μαζῶν. XVI. 48. δάκτυλα φοινίσσονται. XV. 225. ἐλευκαίνοντο δὲ μηροί, καὶ σφυρά φοινίσσονται. de roseo vel purpureo colore membrorum dictum esse apparet. XLVII. 82. οὐ γόος Ἰλισσοῖο χυτῶ φοινίσσεται ὄκκῳ. i. e. hic potus, vinum scilicet rubens, non ex Ilisso haustus est, quippe qui fluvius puras aquas volvat (Plat. Phaedr. p. 229.) — XXI. 78. Γυγατῶ μάστιγι δέμας φοινίξει Λυκούργου, ad sanguinem flagris cecidit. V. 377. περὶθαλέοις δ' ὀνύχεσσιν ἑὰς ἐχάραξε παρειὰς αἵματι φοινίξασα. — XVII. 329. λύδρῳ ἐφοινίσσονται χιτῶνες μαρναμένων, i. e. sanguine maculabuntur. — XII. 322. δράκων πορφυρῆ γασάμυγῃ (vino) φοινίξεν ὑπὲρ ἡν. sic Graefius et Moser. Malim legi hoc quoque loco φοινίξεν, id quod Falkenburgius dedit. Ex iis quos attuli locis intelligitur, φοινίσσειν apud Nonnum positum esse et vi transitiva et more verbi neutrius; atque praeter praesens et imperfectum passivi reperiri aoristum act. med. et pass. et participium praesentis activi.

μαζόν. Homerus plerumque virilis pectoris eam partem, in qua papilla cernitur, μαζόν dicit: paucis admodum locis mammam muliebrem. Nonnus contra de virorum mamilla raro: at de mamma muliebri permultis locis vocem μαζόν usurpavit. XXII. 325. ἰός δασυστέρνοιο κατέγραφεν ἀντυγα μαζοῦ, virilis. Item XXVIII. 99. ἀλχημητὴν δὲ Σέβητα βαλὼν ὑπὲρ ἀντυγα μαζοῦ. 215. γλωχίνῃ τετυμμένος ἀντυγα μαζοῦ. De muliebri autem mamma. V. 378. παιδοκόμων φερέσβιον ἀντυγα μαζῶν. XLVIII. 660. καὶ ἠθάδος ἔχνη μαζοῦ παρδενίῳ ζωστῆρι μάτην ἐσφίγγετο δεσμῶ. Aura expergefata ex somno cum se vitiatam animadvertisset, nudatas corporis partes pudibunda velavit. Pro δεσμῶ Graefius reposuit δεσμῶν nec tamen negavit, id sibi ipsi minus probari; quapropter coniecit παρδενίων ζωστῆρι — δεσμῶν et παρδενίης σωτῆρι — δεσμῶ: altera coniectura, sive δεσμῶν sive παρδενίῳ vel παρδενίων scribitur, non placet: altera concinna quidem est, sed fortasse paullo audacior. Mihi voces παρδενίῳ ζωστῆρι sanae videntur esse (conf. V. 313. XIV. 166.): δεσμῶν quomodo expediri possit, non video. Mihi nescio quo pacto verba ἠθάδος ἔχνη μαζοῦ suspecta sunt. In mentem venit coniecere: ἠθάδος ἠλίκι μαζοῦ παρδ. ζωστ. μ. ἐσφ. δεσμῶ. i. e. μάτην ἐσφ. ἠθ. μαζ. ἠλ. δεσμῶ, παρδενίῳ ζ., ita ut voces παρδ. ζωστ. per epexegesin adiectae essent. Haesitans omnia tentavi: sed nequicquam. XXXIV. 278. λευκός ἐρευθιῶντι χιτῶν φοινίσσεται μαζῶν. XV. 33. νευρήν βροδοῦντι πελαζομένην σέο μαζῶν δοκεῦν. IX. 317. μήτηρ (filiam) ἔτρεφε πίονι μαζῶν. III. 397. πίονος ἰκμάδι μαζοῦ: de ubertate lactis. XXVI. 137. ἀλεξικάκων μαζῶν γάλα: narrat poeta de Tectaphi filia, de cuius pietate iam supra diximus. Eandem rem tetigit eod. libr. 103. δολόεντος ἀμιέλγετο χεύματα μαζοῦ et 142. μαζόν ἀλεξικάκοιο δολοπλόκου ἦνεσε κούρη, δολόεντ. et δολοπλ. dicit, quia Tectaphi filia astu effecit, ut patrem conveniret. XXXVIII. 112. Κλυμένην Τηθύς (mater) διεργῶ μιανώσατο μαζῶν. De voce διεργῶ diximus ad v. 112.

XLVIII. 862. Ἄρτεμις οὐ τρέφειν νύεα μασῶν. 956. Παλλάς μασῶν ὄρεξε, τὸν ἔσπασε μιοῦνος Ἐρεχθεύς. Call. hymn. in Del. 274.: ὁ δὲ γλυκεῖν ἔσπασε μασῶν. XXXV. 173. μασῶς, inquit Venus, ἀκοντίζει πλέον ἔγχους. XLVIII. 369. μασῶι αὐτόματοι κήρυκες ἀσυλήτοις κορείης. i. ex mammarum habitu de virginitate facile conici potest. XXV. 490. τικτομένην δὲ οἱ ἦεν Ἔρις τροφός, ἔγχου δ' αὐτῷ μασῶς ἔην. de Damasene, terrae filio, immani monstro, poeta narrat. Lehrsius ad tollendum hiatum quaest. epic. p. 265. legi iubet: τ. δ' Ἔρις ἦεν, Ἔρις τροφός cet. At geminatio vocis Ἔρις an hoc loco satis apta sit, dubito. fortasse ἔσκε δὲ τικτομένην μὲν Ἔρις τροφός, ἔγχ. δ' αὐτῷ cet. XLVIII. 906. μὴ βριαρόν τεκέσσειν ἐμὸν ποτε μασῶν ὀπάσσω, inquit Aura. 950. καὶ ἀκροτάτης ἀπὸ Φηλῆς παιδοκόμων Φλίβουσα φρεέςβιον ἰκμάδα μασῶν. XLVII. 622. Ῥεΐη (Βάκχῳ) μασῶν ὄρεξε φρεέςβιον. conf. XXXV. 302. — XLVIII. 859. νύεσι μασῶν ὄρεξον ἀήθεα, παρθένη μητέρα (vel, ut Struvius monet, μήτηρ). adde eod. libr. 817. — I. 346. XII. 393. οἰδαλέην ἀκαμπέος ἀντυγα μασῶ. de virgine Europa sermo est. XXX. 217. Morrheus interfecit Codonen virginem — οὐδὲ περὶ στέγνωσαν ἴσον τροχοειδέϊ μῆλῳ μασῶν ἰδὼν ἔλεαγεν, ἀκαμπέα κέντορα μίτηρ. XLVII. 189. Erigone πενθαλόεις ὀνύχουσι ἀκαμπέας ἔξεσε μασῶς. Vulgata est μυρούς, Falkenb. μηρούς Wakefield. et Graefius μασῶς coniecerunt. VII. 331. ἀκλιέντων τροχόσσαν ἴτυν μιτρούσατο μασῶν. XLVIII. 115. ἐρευθιῶντι δὲ δεσμῷ ἀκλιέντων τροχόσσαν ἴτυν μιτρούσατο μασῶν. XXXIV. 280. διὰ πέπλου λεπταλέου σφριγώσσαν ἴτυν τεκμαίρετο μασῶ. his epithetis naturam significat mammarum turgentium. I. 530. ἀλλοτε μίτηρ σφριγώμενην ῥοδόεντος ἴτυν μασῶο δοκεύει. XXIV. 185. ἀμοιβαίησι δὲ ῥοπαῖς τυπτομένων παλάμησιν ἴτυς φοιήσαστο μασῶν αἰμοβαφῆς. atque hoc ipso loco εὐκυκλος ἴτυς φοιήσαστο μασῶν. XLVIII. 367. πῶς σέο μασῶι οὐ τίνα κύκλον ἔχουσι περὶτροχον. eod. libr. 365. μασῶς ὄμφακας, οἰδαίνοντας, ἀψηλέας et 353. Φηλὴν ἔχεις Παφίης, οὐκ ἄρσενα μασῶν Ἀσηήης. his verbis Aura Dianam incessit. De voce ὄμφαξ et ἀψηλῆς vid. Wernick. ad Tryphiod. v. 34. et Lobeck. ad Phrynich. p. 536. ὄμφαξ adiectivum proprie de immaturis cum aliis fructibus tum uvis dicitur, improprie de puellis teneris necdum maturis. Inde ad virginum mamillas translatum est. οἰδαίνοντας sunt mammae turgidae, quales robustiorum puellarum solent esse. ἀψηλέας autem recte Wernickius mammas dicit vocari, quarum papillae nondum emergerint. Ceterum ὄμφαξ adiectivum μασῶς adiectum reperitur I. 71. XLVIII. 957. μασῶν αὐτοχύτῳ στάζοντα νόσον γλάγος ὄμφακι μασῶ. Graefius aut negligentius scripsisse Nonnum censet aut emendandum putat ὄμφακι Φηλῆ vel αὐτόχυτον γλάγος ὄμφακι μῆλῳ. Alterum mihi magis probatur. — XIII. 174. τὸν παρθένο (Minerva) ἀνέτρεφεν ἄρσενι μασῶ. (conf. XXVII. 114 et 323. κούρη σὸν σπόρον αὐτοτέλειστον, Erechtheum scil., ἀνέτρεφεν ἄρσενι μασῶ et XXIX. 338.) — XLVIII. 807. Φηλὴ γάλα στάζουσα λεχῶτον ἄρσενι μασῶ (Diana). XXVI. 53. in insula Graearum παῖδες ἐγήμιονος ἀντὶ τεκούσης ἄρσενι μασῶν ἔχουσι γαλακτοφόρου γενετήρος. Astraea autem Βεροῖην ἐννομα παπτάζουσαν ἀνέτρεφεν ἔμφρονι μασῶ, ita ut Beroe cum lacte nutricis simul legum scientiam sugeret. — De uberibus bestiarum. XIV. 77. αἰγείων γάλα μασῶν. XVII. 78. ἀρτιτόκων γὰρ μασῶν Φλιβομένων χιονώδεις ἰκμάδες αἰγῶν ἀνέρας οὐ τέρπουσι. XXVIII. 318. Ζῆνα αἶξ ἰερὴ γλαγόνει νόσῳ μαιώσατο μασῶ. Callim. h. in Iov. 48. σὺ δ' ἐψησας πίονα μασῶν αἰγός Ἀμαλ-

Σείρης. XLVIII. 913. prolem Aurae et Bacchi πόρδαλις ὠμοβόροισι δέμας λιχμῶσα γυνείοις ἔμφορον μαζῶν ἔχουσα σοφῶ μαιώσατο μαζῶ. Ouaroff. haud iniuria offensus repetita voce μαζός legi voluit aut σοφῶ μαιώσατο Σερμαῖ aut ἔμφορον Συμῶν ἔχουσα. Simile quid vidimus supra (XLVIII. 957.) at hoc loco etiam putidior est eiusdem vocis repetitio. I. 312. ἔμφορον Συμῶν Σρασὺς πῶλος. XIII. 442. ἔμφορον Συμῶν ἔχων δελφίς. XLVII. 144. ἔμφορον Συμῶν ἔχοντες homines dicuntur, qui ebrietate effeferati, postquam crapulam discusserunt, resipiscunt. XLI. 215. Ἀστραίη Βερόην ἀνέτρσφε ἔμφορον μαζῶ. Epitheton σοφός tribuitur lacti Amaltheae XXVIII. 319. Permultis autem locis Nonnus dixit: μαιώσατο κόλπῳ. III. 394. μαιώσατο Σηλῆ. Itaque fortasse legendum: ἔμφορ. μαζῶν ἔχ. σοφῶ μαιώσατο κόλπῳ. Nec tamen coniectura ἔμφορ. Συμῶν ἔχ. minus mihi probatur. Ceterum quanto elegantius Livianum illud: I. 4. lupam submissas infantibus adeo mitem mammas praebuisse, ut lingua lambentem pueros magister regii pecoris invenerit. Pro eo ipso, qui lacte enutritus est, μαζούς poeta posuit: XLVI. 203. φείδεο σῆς ὠδίνος, φείδεο μαζῶν. i. e. parce vitae eius, quem et peperisti et lacte tuo nutritivisti. XXVII. 490. μήτηρ ἔκτανεν υἷα καὶ οὐ πόζος ἔπλετο μαζῶν παιδοκόμων.

Denique μαζός rupis seu collis vocatur ea pars, ex qua ad similitudinem mammae liquor funditur. XXII. 19. ἐρευσφίωοντι μαζῶ οἶνον ἐρευγομίειν κράναη πορφύροστο πέτρῃ, γλεῦκος ἀμιοσχεύτοιο διαβλύζουσα κολώνης ἠδυπότοις λιβάεσσιν. i. e. rupes copiam vini tulit: tantum potuit praesentia Bacchi, qui ubi incedit, lac, vinum, mella fluunt. conf. Eurip. Bacch. 147. Hor. Carm. II. 19. 10. — XLI. 124. πέτρῃ δ' ἀφροῶσα, Συώδεος ἔργυρος οἴνου, πορφύρεν ὠδινὰ χαγαδραῖν τέκε μαζῶ. XLVIII. 576. Bacchus thyrsο terram percutit: διχαζομένη δὲ κολώνη αὐτομάτην ὠδινὴ μίσην εὐώδει μαζῶ χεύματι πορφύροντι. εὐώδει pro εὐώδειν, quod contra metrum est, reposuerunt Dorvill. ad Char. p. 680. et Rhodomann., quos secutus est Spitzner de vers. her. p. 85.

Restat, ut corrigam errorem, qui est part. II. p. 10. Pro Λαομέλλεα legendum Λαοδამία: Error natus est vitio exempli Graeciani. In libro Hanov. est Λαοδαμείης. Vidi Köhler. comment. p. 15. annōt. 2.